

ये अव्यक्त इशारे

रुहानी रॉयल्टी और प्युरिटी की पर्सनैलिटी धारण करो

25-05-2025

अपना निजी-स्वरूप व वरदानी स्वरूप सदा स्मृति में रहे तो अपवित्रता और विस्मृति का नाम-निशान समाप्त हो जायेगा। विस्मृति व अपवित्रता क्या होती है, अब इसकी अविद्या होनी चाहिए क्योंकि यह संस्कार व स्वरूप आपका नहीं है बल्कि आपके पूर्व जन्म का था। अभी आप ब्राह्मण हो, ये तो शूद्रों के संस्कार व स्वरूप है, ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरे के संस्कार अनुभव होना, इसको कहा जाता है -न्यारा और प्यारा।

Adopt the personality of spiritual royalty and purity.

Constantly keep your original and blessed form in your awareness and all traces of impurity and forgetfulness will finish. Now, be ignorant of even the reasons for impurity and forgetfulness because these forms and sanskars are not yours, but were those of your previous birth. You are now Brahmins, whereas those sanskars and that form belong to shudras. To experience your form and sanskars to be those of someone else is known as being loving and detached.